

संसार, भेदों गैर, पुरुषा नर
नरैय, नगर धनिया हाजीर
बारोवा माया और भेद
महानेश होत हुए नर बस सदैव
शिवत ताला टोके की प्रतिम
पर राधापा हुई सम्पन्न अद्वय
पर किंचिज्ज उभासत हावी नै
ताला टोके की प्रतिम पर मुक्त
अपित कर सहोदो का
सम्पन्नति हो और पात्र न
शालिज लेगी का ज्ञानमा
जगत्मा।

